‘चौदह फेरे’ उपन्यास में सामाजिक चेतना

सोनदीप
शोधार्थिन
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

सामाजिक चेतना ‘समाज’ व ‘चतना’ दो शब्दों का योग है, जिसमें ‘सामाजिक’ शब्द समष्टिगत है और ‘चेतना’ का संबंध मनुष्य मन से है। मनुष्य एक समाजिक प्राणी है। उसके जीवन में कभी दुःख और कभी सुख का आगमन होता रहता हे। मनुष्य के जीवन में सदा परिवर्तन होता रहता है। उसका जीवन प्रकृति के नियमानुसार ही बदलता है जिससे समाज के स्वरूप में बदलाव आ जाता है क्योंकि एक व्यक्ति का सीधा सम्बन्ध समाज के साथ जुड़ा होता है। मनुष्य समाज में जन्म लेता है और समाज में रहकर ही अपने कार्य को करता हुआ विकास की ओर अग्रसर होता है। मनुष्यों द्वारा संगठित किए गए ऐसे समूह को समाज कहते हैं जिसके अपने कुछ नियम, परम्पराएँ, मान्याताएँ और नीतिरिवाज होते हैं और समाज में रह रहे हर व्यक्ति के लिए उन नियमों का पालन करना आवश्यक होता है। जब कोई समाज पतन की ओर उन्मुख होता है और उसके विकास की गति समाप्त होने लगती है तो कोई चेना सम्पन्न विचारधारा अपनी चेतना शक्ति से जनमानस को प्रेरित करती है। यही चेतन व्यक्ति में चेतन्ता का निर्माण करती है। एक मनुष्य का चेतन मन ही उसमें चेतना को जागृत करता है। कभी–कभी अज्ञान, अशिक्षा, जड़ता और अभाव मनुष्य को चेतनाशून्य बना देती है। चेतना मनुष्य को इस कुण्ठा से उबार कर नया जीवन प्रदान करती है। चेतना व्यक्ति के साथ सम्बन्धित होने के कारण समाज के साथ अपने–आप ही सम्बन्ध कायम करती है। समाज को प्रेरित करने के लिए साहित्य और साहित्यकार दोनों अपनी भूमिका निभाते हैं।

सामाजिक चेतना मानवीय मनोवृत्ति का सहज परिणाम है। प्रत्येक परिस्थिति में मानवीय चिंतना की सक्रियता बनी रहती है। जब समाज की विकृतियां, विसंगतियां, कुरीतियां आदि बढ़ने लगती हैं तब समाज की विरोधी शक्तियों के विपरीत कुछ रचनातम्क प्रवृतियां समाज की पुनर्रचना के लिए खड़ी हो उठती हैं। साहित्यकारों द्वारा ऐसी रचनाएँ प्रकाशित की जाती हैं जो समाज में नए विचार, चिन्तन, जागृति पैदा करें। क्योंकि एक साहित्यकार भी समाज का प्राणी ही होता है और समाज की रूढ़ियों, परम्पराओं, मान्यताओं, परिस्थितियों का प्रभाव उस पर पड़ता है जिससे प्रभावित होकर वह समाज के हित के लिए साहित्य लिखता है। इस तरह समाज और साहित्य में आदान–प्रदान कचलता रहता है अर्थात् साहित्यकार समाज से चिन्तन करने अपनी रचना लिखता है और उसी रचना से समाज के लोगों को प्रेरित और जागृत करता है। साहित्य पढ़कर समाज पुरानी रूढ़ियों को खण्डित कर नई

परम्पराओं की ओर अग्रसर होता है अपने समाज में नवीनता का समावेश करता है। इसी बात को स्पष्ट करते हुए डॉ. देवराज पथिक ने कहा है, "जड़ रूढ़ियों और मृत परम्पराओं का गला घोंट कर जब कोई
समाज या राष्ट्र नयी दिशा को बढ़ने के लिए ग्रहण करता है और विकास के राजपथ पर बढ़ने का उपक्रम करता है, तब यही स्वीकार किया जा सकता है कि अमुक समाज अथवा राष्ट्र ने करवट बदली है, उसमें जागृति पैदा हुई है।"[1] यह सत्य है कि सामाजिक चेनता पुरानी आदतों को भुलाकर नवीन आदतों को स्वीकार करती है लेकिन पुरानी आदतों से मुक्ति पाने का अर्थ यह नहीं कि सारी पुरानी परम्पराओं का त्याग कर दिया जाए इसका अर्थ यह है कि समाज की रूढ़ परम्पराओं और जीर्ण मान्यताओं को त्यागना।

चेतना ही एक ऐसी शक्ति है जो मनुष्य और समाज को सप्राण बनाये रखती है तथा चेतना की प्रेरणा से मनुष्य विभिन्न कार्य करता है परन्तु चेतना का विकास सामाजिक वातावरण पर आधिारित है। वातावरण से प्रभावित होकर एक व्यक्ति उचित व्यवहारिकता प्राप्त करता है चेतना और व्यक्ति के सामाजिक चरित्र में मौलिक संबंध है क्योंकि चेतना से जो प्रेरणा उत्पन्न होती है उसी से प्रेरित होकर व्यक्ति अपने कार्यों को पूरा करता है। चेतना व्यक्ति से ही नहीं पूरे समाज के साथ जुड़ी हुई है अगर समाज चिन्तन करके, प्रेरित होकर कार्य करेगा तो समाज में नवीनता अपने आप आने लगेगी। "सामाजिक चेतना न केवल समूह के समामजिक क्षेत्र के नियंत्रण से सम्बन्धित है, बल्कि इसका प्रयोग अन्य प्रकार से भी होता है। यह समूह के सदस्यों, जो आपस में एक–दूसरे से व्यवहार करते है, को भी प्रभावित करती है।"[2]

प्रायः देखा गया है कि सामाजिक चेतना की अधिकता समाज के कार्यकर्ताओं, समाज के सुप्रतिष्ठित एवं विशिष्ट वर्ग में और साहित्यकारों में अधिक पाई जाती है। इनकी माध्यम से धीरे–धीरे सारे समाज में प्रसारित हो जाती है। साहित्यकार का यही प्रयास रहता है कि उसके लेखन से सामाजिक जागृति उत्पन्न हो, क्योंकि साहित्यकार द्वारा लिखित लेखन से समाज में नये मूल्यों, नयी मान्यताओं, नयी चेतना को स्थापित किया जाता है। साहित्यकार अपने आप को समाज का अंग मानता है और अपनी रचनाओं से समाज को कुछ प्रदान करना चाहता है जो समाज के हित के लिए लाभदायक हो। 21वीं सदी के महिला साहित्यकारों द्वारा भी इसी उद्देश्य को लेकर ही लिखा है कि वो समाज को एक नई दिशा प्रदान कर सकें। महिला साहित्यकारों में समाज को जागृत करने के लिए शिवानी ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनके उपन्यासों में सामाजिक चेतना का यथार्थ रूप उभर कर सामने आते है। शिवानी एक आदर्शवादी लेखिका

---

[1] *नयी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना, डॉ. देवराज पथिक, कादंबरी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–1985, पृष्ठ–16*

[2] *इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइंस, भाग–3, 4, पृष्ठ–219*

है। वह अंधविश्वासों और कपट व्यवहारों को समाज का असाध्य रोग मानती हैं। शिवानी की दृष्टि हर वर्ग के लोगों पर जाती है और उनके उपन्यासों में नेताओं, साधु–संतों, व्यापारियों, वेश्याओं, रोगियों, निम्न वर्ग आदि का यर्थाथ चित्रण अंकित हुआ है। वह अपने उपन्यासों के माध्यम से नयी विचारधारा को समाज में फैलाना चाहती है। जब समाज में कोई नयी विचारधारा अपने सोद्देश्य को लेकर आती है तो उसमें समाजिकता की भावना का सन्निवेश होता है। "सामाजिक चेतना एक व्यापक परिदृश्य कारक है, सिजमें राजनीति, धर्म, साहित्य आदि अनेक तत्वों का समावेश निहित होता है। जिस राष्ट्र अथवा समाज में रूढ़ियों, परम्पराओं, विसंगतियों, विरुपताओं और विकृतियों से जूझने की जितनी अधिक शक्ति, ललक और जिजीविषा विद्यमान होती है, वह समाज उतना ही चेतनायुक्त होता है। इसके विपरीत जिस समाज में बुराइयों और कुरीतियों से लोहा लेने की शक्ति का दौर्बल्य रहता है वह उतना ही चेतनहीन और मृतप्राय होता है।"[3] सामाजिक चेतना का क्षेत्र विस्तृत एवं व्यापक है। यह जाति, राष्ट्र संस्कृति के अनुसार राष्ट्रीय चेतना, जाती चेतना, सांस्कृतिक चेतना, धार्मिक चेतना आदि विभिन्न प्रकार की हो सकती है। निश्चित रूप से कहा जाए हारी संस्कृति, सम्यता, इतिहास, राजनीति, धर्म आदि सभी में चेतना का वास रहता है। उपरोक्त सभी सामाजिक विवेचनों में शिवानी ने अपने सामाजिक दृष्टिकोण का स्पष्ट परिचय दिया है। इन सभी तत्वों का समावेश शिवानी के उपन्यास 'चौदह फेरे' में देखा जा सकता है।

मार्क्सवादी विचारकों ने समाज को दो वर्गों में स्वीकार दिया है शोषण वर्ग और शोषित वर्ग अर्थात् न्यून और अभिजात वर्ग। आधुनिक युग में न्यून और अभिजात वर्ग के अतिरिक्त मध्य वर्ग का भी आगमन हुआ है। इन तीन वर्गों के अतिरिक्त अन्य वर्ग, समाज सुधारक वर्ग, व्यवसायिक वर्ग, समाज में उपेक्षित वर्ग, कलाकार वर्ग आदि भी हैं। शिवानी के उपन्यास 'चौदह फेरे' में उपरोक्त तीन वर्गों का उल्लेख ही नहीं मिलता, बल्कि उन सब वर्गों के पक्षों को आलोकित किया है जो समाज से सम्बन्धित हैं। चाहे वह समाज से जुड़ा अभिजात वर्ग है या निम्न वर्ग, अंधविश्वास हो या अशिक्षा, भष्टाचार हो या पाखण्ड इन सब का उल्लेख 'चौदह फेरे' उपन्यास में देखा जा सकता है।

अभिजात वर्ग अत्यंत समृद्धिशाली एवं सुखसुविधासंपन्न है। यह वर्ग धन का ज्यादातर उपयोग विलासिता में करते है। इनकी सबसे बड़ी कमी यह होती है कि वह दूसरों के समाने दिखावा ज़्यादा करते है जो वह है इसको बढ़ा बढ़ा कर दिखाना चाहते है। इसी कमी का शिकार 'चौदह फेरे' उपन्यास का कर्नल होता। वह पत्नी नंदी को पार्टी में अपने दोस्तों के साथ और उनकी पत्नियों से हाथ मिलाने का ढंग सिखाता है। इसी उपन्यास में कर्नल जब गाँव से आई अपनी बेटी को नंगे पाँव और अव्यवस्थित कपड़ों में सड़क पर घूमता देखता है तो वह अपनी पत्नी से क्रोधित स्वर में कहता है, "क्यों जी, तुमसे इतना भी नहीं

---

[3] *नयी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना, डॉ. देवराज पथिक, कादम्बरी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–1985, पृष्ठ–17*

होता कि लड़की को सड़क में जाने से रोक सके? अभी–अभी इतने कपड़े सिलवाकर दिये हैं, क्यों नहीं पहनाये और उसके नीचे तुमने जो हरी सलवार पहनाकर एकदम गार्ड की झण्डी बना दिया उसे, गंवार ही नहीं जंगली हो, एकदम, बीड़ी खरीद रही है छोकरी, मेरी इज्जत का तो ख्याल किया होता।"[4] इस वर्ग के लोगों के पास हर सुख सुविधा के होते हुए भी मानसिक रूप से तनावग्रस्त रहते हैं। कर्नल गाँव से आई अपनी पत्नी और बेटी के रहन–सहन, बोलचाल से अपनी बेज्जती महसूस करता है।

मध्यवर्ग में वे लोग आते है जो न तो अभिजात वर्ग की तरह प्रतिष्ठित होते हैं और न ही न्यून वर्ग की तरह अभावग्रस्त। इस वर्ग में दो भाग पहला, उच्च मध्यवर्ग और दूसरा न्यूनमध्य वर्ग पाए जाते हैं। उच्चमध्यवर्ग अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु सदैव प्रयत्नशील रहता है। इस वर्ग की स्त्रियां अपने संस्कारों के कारण अपने परिवार व पति के सम्पन्न और प्रतिष्ठता का अधिक ध्यान रखती है यहां तक कि उनकी सभी यातनाओं को धैर्य से सहती है। 'चौदह फेरे' उपन्यास की नंदी इसी प्रकार की नारी है जो अपने अधिकारों से वंचित होने के पश्चात् भी अपने पति की सारी यातनाओं को सहन करती है। वह अपना पति धर्म निभाती है। शिवानी ने अपने इस उपन्यास में आदर्श पत्नी का रूप दिखाया है अैर यह दिखाकर उच्चमध्यवर्ग की स्त्रियों की स्थिति को व्यक्त किया है।

न्यनमध्य वर्ग की अपनी अलग पहचान होती है। यह वर्ग सदा ही दिखावे और अपनी आर्थिक स्थिति से अधिक खर्च करने में विश्वास करता है। आर्थिक अभाव होने के कारण इस वर्ग के परिवारों में कलह अधिक पाया जाता है। 'चौदह फेरे' उपन्यासों में भी नंदी और उसकी भाभी सावित्री में कलह की भावना देखी जा सकती है क्यों नंदी का भाई अकेला ही कमाने वाला है और घर के खर्चे ज़्यादा है। नंदी की भाभी झगड़ा करती हुई कहती है, "कोई न कोई बात हुई होगी, जो खसम ने दूध की मक्खी सा फेंक दिया। ऐसी ही शरम थी तो भाई की छाती पर मूंग दलने क्यों आ गई? खाने को तो ढाई सेर खाती हो, सवा सेर दूध तो तुम्हारी बिटिया पीवे हैं। उस पर नखरे देखो मुई के; हाय भैया मुझे लवंगादि चूर्ण ला दो, च्यवनप्रास ला दो, बड़ी कमजोरी आ गई है, हमें लूट कर मुटा रही हो बीबी, क्यों भाई–भाभी का धुंआ देखती हो।"[5] शिवानी के उपन्यास में न्यूनमध्यवर्ग की सभी विशेषताओं का चित्रांगन है सभी के उदाहरण देना समीचीन नहीं है। लेकिन उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि इस वर्ग में आर्थिक मंदी के कारण कलह की स्थिति बनी ही रहती है।

न्यून वर्ग समाज में आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ है और साथ ही साथ शिक्षा से बंचित पाया जाता है। इस वर्ग के अन्तर्गत घरेलु नौकर, नौकरानियाँ, मजदूर और चपरासी आते हैं। इस वर्ग का सम्पूर्ण जीवन उच्च और मध्य वर्ग की सेवा में ही निकल जाता है। आर्थिकता के अभाव के कारण यह वर्ग दुष्कर्मों

---

[4] *चौदह फेरे, शिवानी, पृष्ठ–18*
[5] *चौदह फेरे, शिवानी, पृष्ठ–10*

की अग्रसर हो जाता है। शिवानी के उपन्यास में जहाँ ईमानदारी कर्मठ और सच्ची सेवा करने वाले न्यनवर्ग के स्त्रियां और पुरुष है वहीं दूसरी ओर लोभी और स्वार्थी नौकर, नौकरानियों को चित्रित किया गया है। 'चौदह फेरे' उपन्यास की नौकरानी ननीबाला अपनी मालकिन अहल्या के प्रसाधनों तक ही चौरी करती है और घर के काम काज में कभी भी रुचि नहीं दिखाती। शिवानी ने इस चित्र को प्रस्तुत कर यह दिखाया है कि समाज में इस वर्ग का जन्म आर्थिकता का अभाव है। आर्थिक स्थिति अच्छी न होने पर बुरे रस्ते का सहारा ले लिया जाता है।

समाज में हो रहे शोषण के प्रति शिवानी ने आवाज उठाई। उन्होंने अपने उपन्यास में यह दिखाया कि किस तरह व्यवसाय के नाम पर लोगों का शोषण किया जा रहा है। 'चौदह फेरे' उपन्यास की मल्लिका सरकार कर्नल के यहाँ से काम छोड़ने के पश्चात् वेश्या बन जाती है और व्यवसायिक स्वार्थ के लिए अनेक लड़कियों का शोषण करती है, लड़कियों के होस्टल के नाम पर उनसे वेश्यावृत्ति करवाती है। लड़कियों की विवशता का लाभ उठाकर उनका शोषण करती है और उनसे अपने कमीशन की माँग करती हुई स्पष्ट शब्दों में कहती है, "यदि मेरे होस्टल में रहना होगा तो मुझे कमीशन भी अनिवार्य रूप से मिलना चाहिए, नहीं तो मैं उन्हें ब्लैकमेल कर दूंगी।"[6] आज समाज की स्थिति भ्झी ऐसी ही है। प्रत्येक व्यवसाय में शोषण किया जा रहा है। हर कोई अपने फायदे के लिए निम्न वर्ग की विवशता का फायदा कर उठा रहा है। शिवानी ने इस बापत को उठाकर लोगों को शोषण न करने की प्रेरणा दी है। 'चौदह फेरे' उपन्यास में पारिवारिक स्तर पर भी शोषण को दिखाया गया है। शोषण आर्थिक न होकर मानसिक और शारीरिक रूप में भी हो सकता है, जैसे इस उपन्यास में कर्नल अपनी पत्नी के साथ करता है। कर्नल अपनी पत्नी को अपने सामाजिक स्तर का न पाकर उसकी उपेक्षा करता है। गाँव से आई अपनी पत्नी को स्पष्ट शब्दों में कहता है, "देखो आ गयी हो तो अब भुगतना ही पड़ेगा। यहां तुम्हें जैसा भी रखूंगा...... रहना होगा, समझी?"[7] शिवानी के उपन्यासों में सभी प्रकार के शोषण का मार्मिकता से चित्रण दिया गया है।

जब तक समाज में जादू–येनो, जंत्र–मंत्र आदि अंधविश्वासों का बोलवाला है तब तक समाज प्रगति की ओर अग्रसर नहीं हो सकता। आज भी भारतीय समाज में अनेक अंधविश्वास अपना स्थान बनाए हुए है और अंधविश्वासों पर अशिक्षित लोग ही नहीं बल्कि शिक्षित होल भी विश्वास करते है। शिवानी के उपन्यास 'चौदह फेरे' में इस अंधविश्वास की झलक भी पाई जाती है। जो एक सुशिक्षित व्यक्ति है वह भी अंधविश्वास से जुड़ा हुआ दिखाया गया है। कर्नल जब सर्वेश्वर को हीरे की अंगुठी देता है तो वह अपने विश्वास को कायम रखता हुआ कहता है, "जी हां, धन्यवाद, बहुत सुंदर है, पर मेरे जन्म का स्टोन गोमेद

---

[6] *चौदह फेरे, शिवानी, पृष्ठ–204*

[7] *चौदह फेरे, शिवानी, पृष्ठ–12*

है, हीरा जरा प्रतिष्ठा का पहनना होगा।"[8] इसी उपन्यास की नारी पात्र सुशिक्षित अहल्या अंधविश्वास के कारण नीलम की अंगूठी गुम होना अशुभ मानती है। शिवानी अपने उपन्यास में समाज के हर पक्ष को साथ लेकर चली है। इन्होंने बड़े कौशल से इन अंधविश्वासों को समाज के प्रतिरोधी तत्व के रूप में चित्रित किया है।

वर्तमान समाय में देखा जाए तो असहयोग की भावना वैयक्ति स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक विद्यमान है। सहयोग से किसी भी बात का निवारण किया जा सकता है। पारिवारिक सदस्यों के सहयोग से ही परिवार का संचालन किया जाता है। यदि परिवार के समस्य एक दूसरे की भावना को नहीं समझते तो यह भी असहयोग की भावना को जन्म देती है। आज मनुष्य भौतिक वस्तुओं में इतना व्यस्त हो गया है कि उसके पास अपने परिवार और बच्वें को मिलने तथा समझने तक का समय नहीं है। 'चौदह फेरे' उपन्यास का कर्नल अपनी आर्थिक सन्तुष्ठि और सुखों में इतना लिप्त रहता है कि वह अपनी इकलौती पुत्री अहल्या की भावनाओं का सम्मान न करते हुए उसकी इच्छा के विरुद्ध उसका विवाह तय कर देता है। उसकी बेटी विवाह से एक दिन पूर्व घर से भाग जाती है। इस प्रसंग को दिखाना शिवानी का यह उद्देश्य था कि बिना सहयोग के कोई भी परिवार विकसित नहीं हो सकता और अगर सहयोग की भावना किसी व्यक्ति में विद्यमान नहीं होगी तो समाज भी विकास की ओर अग्रसर नहीं हो सकता, क्योंकि एकता में बल है। यदि सभी व्यक्ति पारिवारिक स्तर से राष्ट्रीय स्तर तक एक दूसरे को सहयोग प्रदान करेंगे तो सामाजि उन्नति का होना संभव होगा।

असहयोग की भावना के साथ–साथ अगर भ्रष्टाचार की बात की जाए तो इसे समाज की विकराल समस्या कहा जा सकता है। आज समाज के प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टाचार के विषैले कीटाणुओं को पाया जाता है। इस बात को सिद्ध करने के लिए शिवानी ने अपने उपन्यास 'चौदह फेरे' में बताया है कि कर्नल का सम्पूर्ण घर भ्रष्टाचार के वातावरण से लिप्त है, जिसमें प्रत्येक नौकर अपने–अपने स्वार्थ की सिद्धि में सलंग्न दिखाई देता है। "नंदी के विराट बावर्चीखाने में दिन–रात दावतों का आयोजन पूर्ववत होने लगा था, संयम की शिला किसी सौलाब में डूब कर रह गयी थी, विवेकस्तंभ ढह गया था। अब गृह का प्रत्येक सदस्य, पूर्णरूप में स्वतंत्र था। उड़िया महाराज अपने दाल के कयरे मं जी भर कर घी उंडेल अपने सूखे शरीर की स्मास्थ्यवृद्धि कर सकता था। मुसलमान बावर्ची अहमद पूरे मुर्ग अपने घर भिजवा सकता था। धोवी जितनी चाहे इतनी कमीजें धुलाई में पार कर सकता था।"[9] धार्मिक क्षेत्र में भी अनेक प्रकार के भ्रष्टाचार फैले हुए हैं। 'चौदह फेरे' उपन्यास में चित्रित साधु अधम प्रवृत्ति के हैं जो लड़कियों को बेचने तक का दूष्कार्य करता है। शिवानी केवल भ्रष्टाचारी व्यक्ति को दोषी नहीं मानती, बल्कि उसको भ्रष्टाचार बनाने वाले अर्थात् उसको बढ़ावा देने वालों को भी दोषी मानती है। शिवानी के शब्दों में, "उच्कोच लेने वाले से भी गुरुतर

---

[8] *चौदह फेरे, शिवानी, पृष्ठ–182*
[9] *चौदह फेरे (भूमिका), शिवानी, पृष्ठ–2*

अपराध क्या उत्कोच देने वाले का नहीं होता? जब तक हम कटु सत्य को उदरस्थ नहीं कर पाएंगे तब तक भ्रष्टाचार हमारे देश में कभी नहीं जा सकता।"[10] शिवानी अपने इस उपन्यासों में सामाजिकता के प्रति पूरी तरह समर्पित दिखाई पड़ती है। इसी के साथ–साथ उन्होंने अपने उपन्यासों में शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाने को प्रयास किया है, क्योंकि शिक्षा का स्तर समाज को प्रगतिशीलता की राह पर लेकर चलता है। जो समाज जितन शिक्षित होगा, वह उतना ही सुसंस्कृत, प्रबद्ध और प्रगतिशील होगा। अशिक्षा के कारण ही समाज में रूढ़ियों, अंधविश्वासों का विकास होता है। शिक्षा समाज को एक नयी दिशा प्रदान करती है। शिवानी भी इसी तरह की शिक्षा प्रणाली की पक्षधर है जिसमें समाज के स्त्री–पुरुष अपना स्र्वांगीण विकास करके राष्ट्र के आदर्श नागरिक बन सकें। शिवानी ने अपने उपन्यास में यह दिखाया है एक अशिक्षित व्यक्ति अपने अधिकारों की मांग नहीं कर पाता अर्थात् एक व्यक्ति अपने सहज अधिकार जो उसे मिलने चाहिए, जिस पर उसका हक है, उनसे वंचित रह जाता है। 'चौदह फेरे' का कर्नल अपनी पत्नी के कम पढ़–लिखी होने के कारण उसे अपने साथ नहीं रखता। वह यही सोचता है कि नंदी मेरे सामाजिक स्तर के तौर–तरीकों को ग्रहण नहीं कर सकती। अशिक्षित नंदी अपने अधिकारों को प्राप्त नहीं कर पाती। गाँव से आयी नंदी को उसका पति बोझ समझता है और कहता है, "तुम्हें इसी कमरे में रहना होगा, मेरे किसी काम में तुम दखल नहीं दे सकोगी। अगर इस समझौते के लिए तैयार हो तो शौक से रहो।"[11] शिक्षा के माध्यम से स्त्रियां अपने अधिकारों के प्रति सजग हो सकती हैं। शिक्षा मनुष्य में सामाजिक चेतना जागृत कर उसे अपने अधिकारों और कर्त्ताव्यों के प्रति सचेत भी करती है।

---

[10] *यात्रिका, शिवानी, पृष्ठ–120*

[11] *चौदह फेरे, शिवानी, पृष्ठ–14*